समाजिक अधिगम Social Learning

समाजिक अधिगम एक ऐसा अधिगम है जिसका प्रयोग कर व्यक्ति अपने दैनिक जीवन में व्यवहार में परिवर्तन लाता है। समाजिक अधिगम अपनी एवं विचित्र विशेषता के कारण सभी प्रकार के अधिगम से भिन्न होता है।

लिन्डग्रेन के अनुसार –, "समाजिक अधिगम की प्रक्रिया सम्पर्क के कारण आगे बढ़ती है।"

कोलेसनिक के अनुसार :–, "अधिगम की मात्रा तथा गुणात्मक का निर्धारण अन्तः क्रियात्मक द्वारा निर्धारित होती है। कक्षा के शिक्षण में अन्तः क्रिया के कारण छात्र एक दूसरे से भी सीखते है। तथा उनके सामाजिक व्यवहार में परिवर्तन होता है।

मरसेल के अनुसार —, " समाजिक अधिगम किसी चुनौति या समस्या से आरंभ होता है, जिसके लिए कोई तत्कालिन बना - बनाया समाधान नहीं होता है।

* सामाजिक अधिगम में सहायता देने वाले कारक। Factors helpfull in Social learning

सामाजिक अधिगम में सहायता देने वाले अनेक कारक है जो निम्नलिखित है। —

1. ध्यान –(Attention)
2. अनुकरण (Imitafuion)
3. एकरूपता _(Indentification)
4. मॉडल – (Model's)
5. निरीक्षण कर्ता _ (observers)
6. प्रबलन – (Rainforcement)

* ध्यान (Attention) : —

सामाजिक अधिगम में सहायता देने वाला पहला कारक है 'ध्यान' शिक्षा बालकों के प्रति साधारण से अधिक ध्यान देकर उनके व्यवहार में परिवर्तन कर सकते है। **लिन्डग्रेन के अनुसार –,** " इस बात की भविष्यवाणी की जा सकती है कि जो व्यक्ति दूसरों के व्यवहार में परिवर्तन करने का प्रयत्न करते है वे उनके प्रति साधारण से अधिक ध्यान देकर सफलता प्राप्त करते है।

अनुकरण (Imnitification) :-

समाजिक अधिगम में सहायता देने वाला दूसरा कारक है। अनुकरण बालक दूसरे बालकों एवं व्यक्ति के व्यवहार का अवलोकन और अनुकरण करके अनेक बातें सीखते है। इसका सर्वोत्तम उदाहरण है — भाषा को सीखना

छोटे बच्चें शब्दों और वाक्यों द्वारा अपने भाषा एवं विचारों को दूसरे व्यक्तियों के बोलने का अनुकरण करके सीखते है। बाल्टर्स के अनुसार –," मॉडलों की वास्तविक या सांकेतिक रूप में व्यवस्था व्यवहार को संम्प्रेषित और नियंत्रण करने की अत्यधिक प्रभावपूर्ण विधि है।

एकरूपता (Identification)

सामाजिक अधिगम में सहायता देने वाला तीसरा कारक है। 'एकरूपता' इस शब्द का समान्य अर्थ है - 'कार्य विचार', व्यवहार आदि में किसी दूसरे व्यक्ति के समान होना।

एकरूपता का आधार अनुकरण है। अनुकरण की प्रक्रिया ही एकरूपता को जन्म देती है।

बन्दुरा व वाल्टर्स के अनुसार –," एकरूपता व्यक्ति की वह प्रकृति है जिसके कारण वह जीवित या सांकेतिक व्यक्त किये जाने वाला कार्यों, अभिवृतियों, या संवेगात्मक प्रतिक्रियाओं को पुनः व्यक्त करता है।

इस प्रकार की सामाजिक अधिगम

सकता है। ——

(A) निरीक्षण कर्ताओं अर्थात् बालको को नये प्रकार का व्यवहार करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है।

(B) बालको को इस प्रकार व्यवहार को प्रबल बनाया जा सकता है कि जो उनमें विद्यमान है।

(C) बालको में पाये जाने वाला व्यवहार को रोका जा सकता है।

4 मॉडल (Models) समाजिक अधिगम में सहायता देने वाला चौथा कारक है।

मॉडल — मॉडल का अवलोकन करके सीखना सुविधा जनक प्रतित होता है। बालको के मॉडल के अन्तर्गत वे व्यक्ति आते है। जिनमें अधिक बुद्दि और अधिक योग्यता होती है।

जिनकी समाजिक स्थिति उच्च होती है और और जिनको व्यवहार को सामाजिक स्वीकृति ~~प्रदान है~~ प्राप्त होती है।

बन्दुरा एवं वाल्टर्स के अनुसार :– उन माडलों का अधिक तत्परता से अनुकरण किया जाता है जो पुरस्कार देते है सम्मान पूर्ण होते है या जिनका स्थिति उच्च होती है और जिनका पुरस्कार देने के साधनों पर अधिकार होता है।

5. निरीक्षण कर्ता

सामाजिक अधिगम में सहायता देने वाला पाँचवाँ कारक है। – निरीक्षण कर्ता।

निरीक्षण कर्ता का प्रयोग छात्रों के लिए किया जाता है। क्योंकि वह मॉडल की व्यवहार का निरीक्षण करता है, "ब्लाहट के अनुसार :– जब बालक संवेगात्मक रूप से उत्तेजित हो तब शिक्षकों को न केवल उनके अधिक उत्तम सीखने से लाभ, उठाना चाहिए वरन् शिक्षकों को स्वीकृति व्यवहारों की और बालकों की संवेगात्मक प्रतिक्रियाओं को जाग्रत करने के लिए भी योजना बनानी चाहिए। उदाहरण :—

जब बालक परीक्षा वाद-विवाद प्रतियोगिता व्यायाम प्रदर्शन आदि में सफलता प्राप्त करने के उद्देश्य से चिंतित होकर तनाव की दिशा में होता है, तब उनके सीखने की गति तीव्र हो जाती है।

6. प्रबलन (Rainforcement)

सामाजिक अधिगम में सहायता देने वाला अंतिम कारक है। प्रबलन, प्रबलन शब्द ~~की उत्पत्ति~~ वह शब्द है जो अधिगम का विवेचन करते समय पुरस्कार शब्द से अधिक पसन्द करते हैं।

अतः सामाजिक अधिगम को सफल बनाने के लिए शिक्षक द्वारा प्रबलन का अधिकार निम्नलिखित दो प्रकार का होते हैं। ——

(i) सकारात्मक

(ii) नाकारात्मक

सकारात्मक प्रबलन :—

इनमें कोई उद्दीपन उपस्थित किया जाता है जिसके फलस्वरूप बालक के व्यवहार का पुष्टिकरण होता है। जैसे – शिक्षक की मुस्कान।

नाकारात्मक प्रबलन :—

इनमें कोई उद्दीपन को हटा लिया जाता है जिसके फलस्वरूप बालकों के व्यवहार का पुष्टिकरण होता है जैसे – शिक्षक की अर्मिंदगी।

उपर्युक्त निष्कर्षों के आधार हम कह सकते हैं कि कक्षा में सामाजिक अधिगम को सफल बनाने के लिए शिक्षक द्वारा प्रबलन का अधिक से अधिक प्रयोग किया जाना चाहिए।

निष्कर्ष :—

सामाजिक अधिगम के प्रयोगों से हम यह आशा उत्पन्न हो जाती है कि अधिकांश व्यक्ति अपने व्यवहार के विभिन्न प्रतिमानों को फलस्वरूप अर्जित करते हैं।

The End